पाठ्यक्रम की आवश्यकता –

(Need of Curriculum)

शिक्षा के इतिहास से पता चलता है कि समय के साथ-2 पाठ्यक्रम मे भी परिवर्तन होते रहे हैं। नवीन दृष्टिकोण में पाठ्यक्रम में पाठ्य विषयो के साथ-2 कुछ अन्य प्रवृत्तियों को भी शामिल किया गया है।

शिक्षा मे इसकी क्या आवश्यकता है इस सन्दर्भ मे हम अग्रलिखित बिन्दुओं से प्रकाश डाल सकते हैं

(i) पाठ्यक्रम से छात्र अपनी योग्यता एवं अभिरुचि के अनुसार पाठ्य सामग्री का चयन कर सकता है।

(ii) ज्ञान का स्तरानुसार क्रम बद्ध करने के लिए भी पाठ्यक्रम की आवश्यकता पड़ती है।

(iii) शिक्षक को दिशा निर्देश प्रदान करने के लिए भी पाठ्यक्रम आवश्यक है।

(iv) छात्र के विशिष्ट क्षेत्र तक ले जाने –

पाठ्यक्रम
के लिए ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है।

(v) छात्रों के सर्वांगीण विकास करने के लिए पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है।

पाठ्यक्रम का निर्माण कौन करता है?

पाठ्यक्रम का निर्माण भारत सरकार अपने विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं कमेटियों की संस्तुति के आधार पर करती है।—

(i) N.C.E.R.T. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद)—
N.C.E.R.T. राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण करती है। (N.P.E) 1986 के आधार पर NCERT द्वारा 10 वर्षीय पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

Scanned with CamScanner

Date ______
Page ______

(2.) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग — (U.G.C.)
यह केन्द्रीय सरकार का एक उपक्रम है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। विश्वविद्यालयों को मान्यता के साथ-2 यह अनुदान की व्यवस्था करता है। विश्वविद्यालय (उच्च शिक्षा) का पाठ्यक्रम U.G.C. ही निर्मित / निर्धारित करता है।

(3.) (N.C.T.E.)
राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद —

एन. सी. टी. ई. की स्थापना सम्पूर्ण देश में अध्यापक शिक्षा प्रणाली को नियोजित तथा समन्वित करने के उद्देश्य से की गयी थी। N.C.T.E का अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों के स्तरों के निर्धारण के साथ-साथ, न्यूनतम शैक्षिक योग्यताओं हेतु दिशा-निर्देश तैयार करना।
शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम N.C.T.E. ही निर्धारित करती है।

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु में सम्बन्ध
Relationship Between Curriculum and Syllabus —:

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है। पाठ्यक्रम का विकास समाज के विकास तथा परिवर्तन के साथ सतत रूप से चलता है।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यवस्तु में निम्नलिखित सम्बन्ध है

(i) पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी अनुभव आ जाते हैं जो कक्षा के अन्दर (पाठ्यचर्या) तथा बाहर (पाठ्येत्तर) आयोजित होते जबकि पाठ्यवस्तु (Syllabus) में निर्धारित पाठ्य विषयों से सम्बन्धित क्रियाओं का समावेश होता है।

(ii) पाठ्यवस्तु (Syllabus) पूरे शैक्षिक सत्र निश्चित ज्ञान की माला है जबकि पाठ्यक्रम विभिन्न क्रियाओं के द्वारा पाठ्यवस्तु की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अर्थात् उपर्युक्त वि पी।

(iii) पाठ्य वस्तु का सम्बन्ध ज्ञानात्मक पक्ष

से होता है जबकि पाठ्यक्रम का सम्बन्ध बालक के सम्पूर्ण विकास से होता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम तथा पाठ्यवस्तु में गहरा सम्बन्ध होता है।

हेनरी हरेप के अनुसार— "पाठ्यवस्तु केवल मुद्रित संदर्शिका है। जो यह बताती है कि छात्र को क्या सीखना है"।